

22-इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण

अध्याय 1: इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: पिछले तीन सौ वर्षों में किस चीज़ का असाधारण विकास हुआ है?

उत्तर: पिछले तीन सौ वर्षों में भौतिक विज्ञान और प्रत्यक्षवादी ज्ञान का असाधारण विकास-विस्तार हुआ है।

2. प्रश्न: विज्ञान के विकास से उत्पन्न कुछ प्रमुख पर्यावरणीय खतरे क्या हैं?

अध्याय 1: इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: पिछले तीन सौ वर्षों में किस चीज़ का असाधारण विकास हुआ है?

उत्तर: पिछले तीन सौ वर्षों में भौतिक विज्ञान और प्रत्यक्षवादी ज्ञान का असाधारण विकास-विस्तार हुआ है।

2. प्रश्न: विज्ञान के विकास से उत्पन्न कुछ प्रमुख पर्यावरणीय खतरे क्या हैं?

उत्तर: विज्ञान के विकास से वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, घातक विकिरण, बढ़ता तापमान और पृथ्वी के रक्षा कवच ओजोन में छेद जैसे पर्यावरणीय खतरे उत्पन्न हुए हैं।

3. प्रश्न: प्रत्यक्षवादी तत्त्वदर्शन ने किन मानवीय आदर्शों की गरिमा को कम कर दिया है?

उत्तर: प्रत्यक्षवादी तत्त्वदर्शन ने आत्मा, परमात्मा, कर्मफल, नैतिकता और निष्ठा जैसे मानवीय आदर्शों की गरिमा को कम कर दिया है।

4. प्रश्न: बीसवीं शताब्दी में विज्ञान के उन्माद के कारण कौन से बड़े युद्ध हुए?

उत्तर: विज्ञान के विकास से उत्पन्न उन्माद ने बीसवीं शताब्दी में दो विश्व युद्ध खड़े किए, जिनमें अपार धन-जन की हानि हुई।

5. प्रश्न: जनसंख्या वृद्धि का भविष्य में क्या दुष्प्रभाव हो सकता है?

उत्तर: तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण भावी पीढ़ी के लिए खाद्य, निवास, शिक्षा और चिकित्सा जैसी बुनियादी सुविधाओं का प्रबंध करना मुश्किल हो जाएगा।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, वैज्ञानिक उपलब्धियों का सदुपयोग न हो पाना एक दुर्भाग्य क्यों है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, वैज्ञानिक उपलब्धियों का सदुपयोग न हो पाना एक दुर्भाग्य है क्योंकि इसके कारण हम अभावों वाले पुराने समय की तुलना में कहीं अधिक विपन्न और परेशान हालतों में जी रहे हैं। विज्ञान ने

सुविधाएँ तो बढ़ाई, लेकिन साथ ही आणविक अस्त्र, प्रदूषण और युद्ध जैसी विनाशकारी परिस्थितियाँ भी पैदा कर दीं, जो मानव अस्तित्व के लिए खतरा हैं।

2. प्रश्न: प्रत्यक्षवादी विचारधारा ने मनुष्य को पशु जैसा कैसे बना दिया है?

उत्तर: प्रत्यक्षवादी विचारधारा ने मानवीय आदर्शों जैसे नैतिकता और कर्मफल को नकार दिया है और सिर्फ तात्कालिक लाभ को महत्व दिया है। इसके कारण मनुष्य किसी भी तरह की मर्यादा या वर्जना को मानने के लिए बाध्य नहीं रहा, ठीक वैसे ही जैसे एक पशु पर कोई अंकुश नहीं होता।

3. प्रश्न: जनसंख्या वृद्धि और मानवीय मूल्यों के पतन के बीच क्या संबंध है?

उत्तर: जनसंख्या वृद्धि के कारण संसाधनों पर भारी दबाव पड़ेगा, जिससे भविष्य में भोजन और निवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की कमी हो जाएगी। ऐसी स्थिति में, मनुष्य अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करेगा और भूखे भेड़ियों की तरह एक-दूसरे का शोषण करने या उन्हें नुकसान पहुँचाने के स्तर तक गिर सकता है, जिससे मानवीय मूल्यों का पतन होगा।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक विज्ञान-विकास को सराहने पर प्रश्न क्यों उठाते हैं, जबकि उसने सुविधा-साधन भी बढ़ाए हैं?

उत्तर: लेखक विज्ञान-विकास को सराहने पर इसलिए प्रश्न उठाते हैं क्योंकि इसके द्वारा दिए गए सुविधा-साधन उन विनाशकारी परिस्थितियों की तुलना में बहुत छोटे हैं जो इसने पैदा की हैं। विज्ञान ने हमें वायु-जल प्रदूषण, घातक विकिरण, आणविक युद्ध का खतरा और ओजोन परत में छेद जैसी समस्याएँ दी हैं, जो पृथ्वी पर जीवन को ही समाप्त कर सकती हैं। लेखक का तर्क है कि ऐसा विकास किस काम का जो अंततः मानव जाति के विनाश का कारण बन जाए।

2. प्रश्न: "अन्तरिक्ष युद्ध का नियोजन" मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा कैसे है?

उत्तर: "अन्तरिक्ष युद्ध का नियोजन" मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है क्योंकि यह सिर्फ धरती तक सीमित नहीं है। इसकी योजना इस तरह बनाई जा रही है कि यह धरती और आसमान पर रहने वाले सभी प्राणियों और वनस्पतियों का नाम-निशान मिटा सकता है। यह एक ऐसा सर्वनाशकारी कदम है जो पृथ्वी के संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट कर सकता है और जीवन के हर रूप को समाप्त कर सकता है।

अध्याय 2: सदुपयोग न हो पाने की विडम्बना

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: यदि प्रगति का सदुपयोग किया गया होता, तो आज दुनिया कैसी होती?

उत्तर: यदि प्रगति का सदुपयोग किया गया होता, तो आज दुनिया बहुत सुन्दर और समुन्नत होती, जहाँ सर्वत्र

प्रगति, प्रसन्नता और सुख-शान्ति का वातावरण होता।

2. प्रश्न: आज अमीर और गरीब, दोनों ही असंतुष्ट क्यों हैं?

उत्तर: आज अमीर और गरीब, दोनों ही साधनों की दृष्टि से असंतुष्ट हैं क्योंकि वे कुबेर जैसे धनवान बनना चाहते हैं और उनमें मिल-बाँटकर खाने की इच्छा नहीं है।

3. प्रश्न: मनुष्य ने अपना कौन-सा स्वास्थ्य गँवा दिया है?

उत्तर: मनुष्य ने अपना शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक स्वास्थ्य पूरी तरह गँवा दिया है।

4. प्रश्न: आज की प्रमुख समस्या क्या है?

उत्तर: आज की प्रमुख समस्या विचार विकृति, आस्था का संकट, भ्रान्तियों का फैलाव और कुविचारों का साम्राज्य है।

5. प्रश्न: स्नेह और सहयोग के वातावरण में मनुष्य को कैसा अनुभव होता?

उत्तर: स्नेह, सौजन्य, सद्भाव और सहयोग के वातावरण में हर किसी को उल्लास और आनन्द का ही अनुभव होता।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने मनुष्य के जीवन की तुलना "मरघट के भूत-पलीतों" से क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने मनुष्य के जीवन की तुलना "मरघट के भूत-पलीतों" से इसलिए की है क्योंकि बाहरी चमक-दमक के बावजूद, मनुष्य भीतर से आशंकाओं और उद्विग्नताओं से घिरा हुआ है। वह लगातार डर में जीता है और दूसरों को डराता है, ठीक वैसे ही जैसे मरघट में रहने वाले भूत-प्रेत अशांत और भयभीत रहते हैं।

2. प्रश्न: "विचार विकृति" को सभी समस्याओं की जड़ कैसे माना गया है?

उत्तर: "विचार विकृति" को सभी समस्याओं की जड़ माना गया है क्योंकि बुरे कर्म (कुकृत्य) बुरे विचारों (कुविचारों) से ही जन्म लेते हैं। जब व्यक्ति का चिंतन ही गलत दिशा में हो, तो उसके कार्य भी गलत होंगे, जिससे समाज में अनाचार और कष्ट फैलेंगे। इसलिए, जब तक इस वैचारिक जड़ को नहीं काटा जाएगा, तब तक कष्टों से छुटकारा नहीं मिल सकता।

3. प्रश्न: प्रगति के बावजूद मनुष्य दुखी क्यों है? इसके पीछे कौन-सी मूल भ्रान्ति काम कर रही है?

उत्तर: प्रगति के बावजूद मनुष्य दुखी है क्योंकि उसने जो कुछ भी पाया, उसका उपयोग सर्वजन के हित में करने के बजाय संकीर्ण स्वार्थ के लिए किया। इसके पीछे मूल भ्रान्ति यह है कि अधिक से अधिक साधन जमा करने और दूसरों का शोषण करने से सुख मिलेगा, जबकि वास्तविकता यह है कि ऐसा करने से वह निरंतर चिंतित, असंतुष्ट और व्याकुल बना रहता है।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, "सही जीवन जीने की कला" क्या है और इसे न अपना पाने के क्या परिणाम हुए हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, "सही जीवन जीने की कला" का अर्थ है सही विचार करना और उन्हें अपने जीवन में अपनाना, जिसमें मिल-बाँटकर खाना, स्नेह, सौजन्य, और सहयोग जैसे मूल्य शामिल हैं। इसे न अपना पाने का परिणाम यह हुआ है कि मनुष्य ने प्रगति से प्राप्त साधनों का दुरुपयोग किया, जिससे वह शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक स्वास्थ्य खो चुका है और चारों ओर अशांति और असंतोष का वातावरण है।

2. प्रश्न: आज के समाज में अनाचार और विक्षोभ के फैलाव के मूल कारणों का विश्लेषण करें।

उत्तर: आज के समाज में अनाचार और विक्षोभ के फैलाव का मूल कारण केवल बाहरी परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर की "विचार विकृति" और "आस्था का संकट" है। जब लोगों के विचार ही गलत हों और उनकी आस्था सही मूल्यों में न हो, तो वे भ्रमित होकर गलत कार्य करते हैं, जिससे समाज में अनाचार फैलता है। यह विक्षोभ और अशांति इसी आंतरिक संकट का बाहरी प्रतिबिंब है।

अध्याय 3: आज की सबसे प्रमुख आवश्यकता

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इन दिनों सबसे बड़ा और सबसे आवश्यक कार्य क्या है?

उत्तर: इन दिनों सबसे बड़ा और सबसे आवश्यक कार्य विचार क्रान्ति का व्यापक आयोजन करना है।

2. प्रश्न: नवयुग के अवतरण का एकमात्र उपाय क्या बताया गया है?

उत्तर: नवयुग के अवतरण या सतयुग की वापसी का एकमात्र उपाय मानवीय गरिमा के अनुरूप मर्यादाओं का पालन और वर्जनाओं का अनुशासन अपनाना है।

3. प्रश्न: लेखक ने किस कार्य को सबसे बड़ा पुण्य-परमार्थ कहा है?

उत्तर: लेखक ने धर्म की धारणा तथा सत्य, प्रेम और न्याय की आराधना को सबसे बड़ा पुण्य-परमार्थ कहा है।

4. प्रश्न: विचार क्रान्ति के लिए कौन-सी नीति अपनाने की बात कही गई है?

उत्तर: विचार क्रान्ति के लिए "लोहा से लोहा काटने की, काँटे से काँटा निकालने की" नीति अपनाने की बात कही गई है, अर्थात् सद्बिचारों से कुबिचारों को समाप्त करना।

5. प्रश्न: दुनिया के कितने मनुष्यों की "ब्रेन वाशिंग" का प्रश्न है?

उत्तर: दुनिया के ६०० करोड़ मनुष्यों की "ब्रेन वाशिंग" (विचार परिष्कार) का प्रश्न है। (कृपया ध्यान दें कि यह आँकड़ा पुस्तक लेखन के समय का है।)

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "मानवीय गरिमा के अनुरूप मर्यादाओं का पालन" का क्या अर्थ है?

उत्तर: "मानवीय गरिमा के अनुरूप मर्यादाओं का पालन" का अर्थ है ऐसे आचरण और व्यवहार को अपनाना जो मनुष्य होने के नाते हमारे गौरव को बढ़ाए, जैसे सत्य, प्रेम, न्याय, सहयोग और अनुशासन। यह स्वार्थ और संकीर्णता से ऊपर उठकर मानवता के हित में सोचना और कार्य करना है।

2. प्रश्न: लेखक विचार क्रान्ति को "महाभारत" क्यों कहते हैं?

उत्तर: लेखक विचार क्रान्ति को "महाभारत" कहते हैं क्योंकि यह अच्छाई और बुराई के बीच एक बहुत बड़ा संघर्ष है। यह संघर्ष बाहरी दुनिया में नहीं, बल्कि लोगों के विचारों और आस्थाओं के स्तर पर लड़ा जाना है। जैसे महाभारत में धर्म की स्थापना के लिए युद्ध हुआ, वैसे ही यह विचार-युद्ध समाज में अवांछनीयता के विरुद्ध और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए है।

3. प्रश्न: सद्विचारों के उत्पादन और वितरण से शोक-सन्ताप कैसे दूर हो सकते हैं?

उत्तर: शोक और सन्ताप का मूल कारण कुविचार और गलत दृष्टिकोण हैं। जब सद्विचारों का उत्पादन और वितरण व्यापक रूप से होगा, तो लोगों के सोचने का तरीका बदलेगा। वे समस्याओं को सही नजरिए से देखेंगे, समाधान खोजेंगे और निराशा की जगह आशा और विवेकशीलता को अपनाएँगे, जिससे शोक और सन्ताप अपने आप दूर हो जाएँगे।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विचार क्रान्ति में "अवांछनीयता की गर्दन काटना" और "विवेकशीलता की स्थापना" के दोहरे उद्देश्य का विश्लेषण करें।

उत्तर: विचार क्रान्ति का उद्देश्य दोहरा है। पहला, "अवांछनीयता की गर्दन काटना", जिसका अर्थ है समाज और व्यक्ति के मन में गहरी जड़ें जमा चुकी नकारात्मक प्रवृत्तियों जैसे स्वार्थ, भ्रष्टाचार, अन्याय और अनैतिकता को समाप्त करना। दूसरा, "विवेकशीलता की स्थापना", जिसका अर्थ है इन नकारात्मक विचारों की खाली हुई जगह पर सकारात्मक मानवीय मूल्यों जैसे उदारता, एकता, समता और सहयोग को स्थापित करना। यह केवल विनाश नहीं, बल्कि एक नए और बेहतर समाज का निर्माण भी है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि एकता और समता के लिए लोगों को "आमन्त्रित ही नहीं बाधित भी किया जाना है"? इस कथन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इस कथन का तात्पर्य यह है कि समाज का परिवर्तन केवल व्यक्तिगत इच्छा पर नहीं छोड़ा जा सकता। कुछ लोग स्वेच्छा से अच्छे विचारों को अपना लेंगे (आमन्त्रण), लेकिन जो लोग अपनी गलत आदतों और स्वार्थों में इतने गहरे धँसे हुए हैं, उन्हें बदलने के लिए सामाजिक दबाव, अनुशासन और नियमों की

आवश्यकता होगी (बाधा)। इसका उद्देश्य बल प्रयोग नहीं, बल्कि एक ऐसा मजबूत सामाजिक और नैतिक वातावरण बनाना है जहाँ गलत आचरण असंभव हो जाए और सही मार्ग पर चलना ही एकमात्र विकल्प बचे।

अध्याय 4: प्रयोग का शुभारम्भ और विस्तार

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विचार क्रान्ति का शुभारम्भ कैसे और कहाँ से करने का उपाय सूझा?

उत्तर: विचार क्रान्ति का शुभारम्भ "खोज घर से आरम्भ करनी चाहिए" के उपाय से सूझा, अर्थात् पहले स्वयं को और अपने निकटतम लोगों को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करना।

2. प्रश्न: युग निर्माण मिशन के संस्थापक ने नव सृजन का श्रीगणेश कैसे किया?

उत्तर: युग निर्माण मिशन के संस्थापक, पूज्य आचार्य जी ने अपनी निजी सम्पत्ति जनता-जनार्दन को सौंपकर और स्वयं आदर्श जीवन जीकर नव सृजन का श्रीगणेश किया।

3. प्रश्न: विचार क्रान्ति के लिए आचार्य जी ने किन पत्रिकाओं का उपयोग किया?

उत्तर: उन्होंने हिन्दी में "अखण्ड ज्योति" और "युग निर्माण योजना" पत्रिका तथा सात अन्य भारतीय भाषाओं में पत्रिकाओं का उपयोग किया।

4. प्रश्न: मिशन का विस्तार तंत्र क्या है?

उत्तर: मिशन का विस्तार तंत्र "एक से पाँच, पाँच से पच्चीस" का है, जिसमें प्रत्येक सदस्य को अपने पाँच-पाँच नए साथी तैयार करने का भार सौंपा जाता है।

5. प्रश्न: गुरु गोविन्द सिंह और हरिश्चन्द्र ने आदर्श प्रस्तुत करने के लिए क्या किया था?

उत्तर: गुरु गोविन्द सिंह ने अपने पाँचों पुत्रों को अग्रगामी बनाया और राजा हरिश्चन्द्र ने स्वयं ही गुरु (विश्वामित्र) की आवश्यकता पूरी की थी।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "बिल्ली के गले में घण्टी बाँधने" जैसा टेढ़ा प्रश्न क्या था और उसका क्या समाधान निकाला गया?

उत्तर: "बिल्ली के गले में घण्टी बाँधने" जैसा टेढ़ा प्रश्न यह था कि विचार क्रान्ति जैसा महान कार्य कैसे और कहाँ से शुरू हो, और इसके लिए साहसी व आत्मदानी लोग कहाँ से मिलें। इसका समाधान यह निकाला गया कि इसकी शुरुआत स्वयं से और अपने घर से की जानी चाहिए, क्योंकि अपना उदाहरण प्रस्तुत करके ही दूसरों को प्रेरित किया जा सकता है।

2. प्रश्न: पत्रिकाएँ केवल वाचन सामग्री न होकर पाठकों को कैसे झकझोरती थीं?

उत्तर: पत्रिकाएँ केवल पढ़ने की सामग्री नहीं थीं, बल्कि वे पाठकों के अंतर्मन को इस गहराई तक झकझोरती

थीं कि वे युग की समस्याओं को समझें और उनसे जूझने के लिए अपना योगदान देने हेतु प्रेरित हो जाएँ। वे पाठकों में आत्मीयता स्थापित कर उन्हें मिशन के साथ जोड़ती थीं।

3. प्रश्न: "एक से पाँच, पाँच से पच्चीस" का तंत्र कैसे विश्वव्यापी परिवर्तन ला सकता है?

उत्तर: यह तंत्र गुणोत्तर वृद्धि (geometric progression) के सिद्धांत पर काम करता है। शुरुआत में संख्या भले ही कम लगे, लेकिन हर व्यक्ति जब पाँच नए लोगों को जोड़ता है, तो यह संख्या बहुत तेजी से बढ़ती है। इस प्रकार, कुछ ही चरणों में यह करोड़ों लोगों तक पहुँचकर एक विशाल जन-शक्ति का निर्माण कर सकती है, जो विश्वव्यापी परिवर्तन लाने में सक्षम हो।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने दशरथ, गुरु गोविन्द सिंह और हरिश्चन्द्र के उदाहरण क्यों दिए हैं? ये उदाहरण विचार क्रान्ति के शुभारम्भ के लिए क्या सिखाते हैं?

उत्तर: लेखक ने ये उदाहरण यह सिखाने के लिए दिए हैं कि किसी भी महान कार्य या क्रांति का नेतृत्व करने वाले को सबसे पहले स्वयं और अपने परिवार को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करना होता है। दशरथ ने राष्ट्रहित में अपने सबसे प्रिय पुत्रों को सौंपा, गुरु गोविन्द सिंह ने अपने पुत्रों का बलिदान दिया और हरिश्चन्द्र ने स्वयं को समर्पित किया। यह सिखाता है कि विचार क्रान्ति की सफलता के लिए नेतृत्व को सर्वोच्च त्याग और समर्पण का उदाहरण पेश करना होगा, तभी दूसरे लोग अनुसरण के लिए प्रेरित होंगे।

2. प्रश्न: युग निर्माण मिशन की विशालकाय योजनाओं की सफलता के पीछे जन-शक्ति की क्या भूमिका है?

उत्तर: युग निर्माण मिशन की योजनाओं की सफलता का आधार ही जन-शक्ति है। यह जन-शक्ति पत्रिकाओं के माध्यम से वैचारिक रूप से जुड़े पाठकों से बनती है। यही लोग मिशन के स्थायी सदस्य बनते हैं और "एक से पाँच" के सिद्धांत पर नेटवर्क का विस्तार करते हैं। यह केवल संख्याबल नहीं है, बल्कि वैचारिक रूप से प्रतिबद्ध और प्रेरित लोगों का एक संगठन है, जो सामूहिक संकल्प और प्रयास से बड़ी से बड़ी योजनाओं को संभव बना सकता है।

अध्याय 5: प्रखर प्रेरणा का जीवन्त तंत्र

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: जन मानस के परिष्कार के लिए किन तीन चीजों की आवश्यकता होती है?

उत्तर: जन मानस के परिष्कार के लिए सशक्त लेखनी, वाणी और एक प्रेरक व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है।

2. प्रश्न: आचार्य जी ने कौन-से प्रमुख ग्रन्थों का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद किया?

उत्तर: आचार्य जी ने लगभग सभी आर्ष ग्रन्थों जैसे चारों वेद, १०८ उपनिषद्, छह दर्शन, चौबीस गीताएँ, स्मृतियाँ, और ब्राह्मण आरण्यक आदि का अनुवाद किया।

3. प्रश्न: साहित्य को घर-घर पहुँचाने के लिए किन माध्यमों का उपयोग किया जाता है?

उत्तर: साहित्य को घर-घर पहुँचाने के लिए झोला पुस्तकालयों और ज्ञान-रथों का उपयोग किया जाता है।

4. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में वाणी (संगीत और प्रवचन) सिखाने के लिए क्या व्यवस्था है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज में संगीत और प्रवचन सिखाने के लिए निरंतर सत्र शृंखला चलती रहती है, जिसमें हजारों लोग आकर प्रशिक्षण लेते हैं।

5. प्रश्न: कार्यकर्ताओं की गतिविधियों को चलाने के लिए संस्था द्वारा बनाए गए छोटे आश्रमों को क्या नाम दिया गया है?

उत्तर: इन छोटे-बड़े आश्रमों को 'प्रज्ञापीठ' नाम दिया गया है।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, एक मार्गदर्शक का निजी व्यक्तित्व, लेखनी और वाणी से अधिक सशक्त क्यों होता है?

उत्तर: मार्गदर्शक का निजी व्यक्तित्व इसलिए अधिक सशक्त होता है क्योंकि लोग जो सुनते या पढ़ते हैं, उसकी तुलना में वे जो देखते हैं, उससे अधिक प्रभावित होते हैं। यदि मार्गदर्शक स्वयं आदर्शों पर नहीं चलता, तो उसकी बातें प्रभावहीन हो जाती हैं और उपहास का पात्र बनती हैं। एक जीता-जागता उदाहरण शब्दों से कहीं अधिक प्रेरणा देता है।

2. प्रश्न: "झोला पुस्तकालयों" और "ज्ञान-रथों" की अनोखी कार्यप्रणाली क्या है और यह क्यों प्रभावी है?

उत्तर: इनकी कार्यप्रणाली अनोखी है क्योंकि ये केवल पुस्तकें बेचते नहीं हैं, बल्कि प्राणवान् कार्यकर्ता घर-घर जाकर शिक्षितों को मुफ्त में पढ़ने के लिए युग साहित्य देते हैं और बाद में वापस ले आते हैं। जो पढ़ नहीं सकते, उन्हें पढ़कर सुनाते हैं। यह प्रणाली इसलिए प्रभावी है क्योंकि यह ज्ञान को लोगों के दरवाजे तक पहुँचाती है, खासकर उन लोगों तक जो आर्थिक कारणों से पुस्तकें नहीं खरीद सकते, और व्यक्तिगत संपर्क के कारण इसका प्रभाव गहरा होता है।

3. प्रश्न: "प्रज्ञापीठ" किस प्रकार मिशन के कार्यों को स्थानीय स्तर पर निरंतरता प्रदान करते हैं?

उत्तर: "प्रज्ञापीठ" स्थानीय स्तर पर मिशन की गतिविधियों के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। ये कार्यकर्ताओं को एक स्थान प्रदान करते हैं जहाँ वे योजना बना सकते हैं, मिल सकते हैं और अपने क्षेत्र में निरंतर जनसम्पर्क और जागरण के कार्यक्रम चला सकते हैं। चूँकि ये संस्थान स्थानीय लोगों के अंशदान और समयदान से चलते

हैं, इसलिए ये आत्मनिर्भर होते हैं और मिशन के कार्यों को स्थायी रूप से आगे बढ़ाते हैं।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मिशन के सूत्र संचालक ने अपने जीवन में "समय, श्रम और मनोयोग का एक कण भी अभीष्ट लक्ष्य के अतिरिक्त और किसी काम में खर्च नहीं किया।" इस कथन का मिशन की सफलता में क्या महत्व है?

उत्तर: इस कथन का मिशन की सफलता में अत्यधिक महत्व है क्योंकि यह एक नेतृत्वकर्ता के पूर्ण समर्पण और एकाग्रता को दर्शाता है। जब कोई व्यक्ति अपना संपूर्ण जीवन, अपनी पूरी ऊर्जा और अपनी हर सोच एक ही लक्ष्य के लिए समर्पित कर देता है, तो वह एक जीवंत प्रेरणा स्रोत बन जाता है। इसी समर्पण ने उन्हें इतना विशाल साहित्य रचने, लाखों लोगों को प्रेरित करने और एक विश्वव्यापी संगठन खड़ा करने की शक्ति दी। यह साबित करता है कि असाधारण सफलता के लिए असाधारण समर्पण आवश्यक है।

2. प्रश्न: जन मानस के परिष्कार में लेखनी, वाणी और व्यक्तित्व के समन्वय की भूमिका का विश्लेषण करें। ये तीनों मिलकर एक जीवन्त तंत्र कैसे बनाते हैं?

उत्तर: लेखनी, वाणी और व्यक्तित्व मिलकर एक शक्तिशाली और जीवन्त तंत्र बनाते हैं। लेखनी (साहित्य) स्थायी रूप से विचारों को फैलाती है और लोगों को बौद्धिक आधार प्रदान करती है। वाणी (प्रवचन/संगीत) भावनाओं को छूती है और लोगों को तुरंत प्रेरित करती है। लेकिन इन दोनों को प्रामाणिकता और विश्वसनीयता व्यक्तित्व (आचरण) से मिलती है। जब एक आदर्श व्यक्तित्व, सशक्त वाणी के माध्यम से, गहन साहित्य में लिखे विचारों को प्रस्तुत करता है, तो इसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। यह एक पूर्ण पैकेज बन जाता है जो व्यक्ति के मस्तिष्क, हृदय और आत्मा, तीनों पर एक साथ प्रभाव डालता है, जिससे स्थायी परिवर्तन संभव होता है।

अध्याय 6: लोक सेवी कार्यकर्ताओं का उत्पादन

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: जन-जागरण के लिए शान्तिकुञ्ज से भेजी जाने वाली प्रचार टोलियाँ क्या करती थीं?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज से भेजी जाने वाली प्रचार टोलियाँ देश भर में घूमकर बड़ी संख्या में उपस्थित जनता को अपना जीवनक्रम बदलने के लिए मर्मस्पर्शी उद्बोधन देती थीं।

2. प्रश्न: भाव संवेदनाओं में आदर्शवादिता भरने के लिए किस स्तर के कार्यकर्ता चाहिए?

उत्तर: इसके लिए साधु-ब्राह्मण, परिव्राजक, वानप्रस्थ स्तर के निस्पृह (स्वार्थरहित) कार्यकर्ता चाहिए।

3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में रहने वाले लगभग १५०० व्यक्ति प्रतिदिन कितने घंटे श्रमदान करते हैं?

उत्तर: वे प्रतिदिन दस घंटे श्रमदानी स्वयं सेवक की तरह काम करते हैं।

4. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में "व्यावहारिक साम्यवाद" का क्या उदाहरण देखने को मिलता है?

उत्तर: यहाँ 'जाति वंश सब एक समान' और 'नर और नारी एक समान' का सिद्धांत पूरी तरह लागू होता है, जहाँ कार्यकर्ता मिल-जुलकर सभी काम करते हैं और मितव्ययिता भरा जीवन जीते हैं।

5. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की अर्थ व्यवस्था कैसे चलती है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज की अर्थ व्यवस्था मिशन के परिजनों (सदस्यों) के स्वेच्छा सहयोग से चलती है।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: आज के समय में समर्पित कार्यकर्ता मिलना क्यों कठिन है?

उत्तर: आज के समय में समर्पित कार्यकर्ता मिलना इसलिए कठिन है क्योंकि आमतौर पर हर व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों में इतना उलझा हुआ है कि उसे युग क्रान्ति जैसे परमार्थ के कार्यों में न तो रुचि है और न ही उसके पास समय है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, वेतनभोगी कार्यकर्ता भाव संवेदना जगाने में सफल क्यों नहीं हो सकते?

उत्तर: लेखक के अनुसार, भाव संवेदना जगाने का कार्य वेतनभोगी कार्यकर्ता इसलिए नहीं कर सकते क्योंकि यह कार्य गहरी श्रद्धा और आदर्शों से जुड़ा है। इसके लिए ऐसे निस्वार्थ और त्यागी व्यक्तियों की आवश्यकता है जो जनता की श्रद्धा जीत सकें और उन्हें अपने आदर्शों से प्रेरित कर सकें, जो वेतन लेकर काम करने वालों के लिए संभव नहीं है।

3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज ने "वानप्रस्थ परम्परा" को पुनर्जीवित कैसे किया है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज ने "वानप्रस्थ परम्परा" को इस रूप में पुनर्जीवित किया है कि लोग अपनी अच्छी-खासी आजीविका छोड़कर समर्पित भाव से आश्रम में आते हैं और अपना जीवन लोकसेवा के लिए लगाते हैं। यह उसी प्राचीन परम्परा का आधुनिक रूप है जिसमें परिवार का एक सदस्य समाज सेवा के लिए समर्पित होता था।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "आध्यात्मिक साम्यवाद" की अवधारणा क्या है और शान्तिकुञ्ज में यह कैसे चरितार्थ होती है?

उत्तर: "आध्यात्मिक साम्यवाद" का अर्थ है एक ऐसा समाज जहाँ भौतिक समानता के साथ-साथ आध्यात्मिक एकता का भाव भी हो, जहाँ जाति, लिंग या आर्थिक स्थिति का कोई भेद न हो और सभी मिलकर एक उच्च लक्ष्य के लिए काम करें। शान्तिकुञ्ज में यह इस प्रकार चरितार्थ होता है कि उच्च शिक्षित लोग भी सफाई, पहरेदारी जैसे काम मिल-जुलकर करते हैं, आर्थिक व्यवस्था स्वेच्छा सहयोग पर चलती है और सभी नर-नारी समान भाव से आत्मिक उल्लासपूर्वक जीवन जीते हैं।

2. प्रश्न: लेखक क्यों मानते हैं कि युग सन्धि के बारह वर्षों में एक लाख लोकसेवी तैयार करना असंभव

लगने पर भी संभव है?

उत्तर: लेखक मानते हैं कि यह लक्ष्य असंभव लगने पर भी संभव है क्योंकि इसके लिए एक तूफानी आन्दोलन खड़ा करने की योजना है। उनका तर्क है कि जब एक व्यक्ति (हजारी किसान) लगन से हजार बाग लगवा सकता है, तो एक सामूहिक और प्रेरित आंदोलन से लाखों लोगों को जोड़ा जा सकता है। इतिहास में बुद्ध और गाँधी के आंदोलनों में भी लाखों लोग अनायास ही जुड़ गए थे, जो यह बताता है कि समय की माँग और एक प्रबल प्रेरणा से बड़े लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

अध्याय 7: विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में ब्रह्मवर्चस आश्रम की स्थापना क्यों की गई?

उत्तर: ब्रह्मवर्चस आश्रम की स्थापना अध्यात्म का विज्ञान के आधार पर नए सिरे से प्रतिपादन करने के लिए की गई है, ताकि नई पीढ़ी के बुद्धिवादी लोगों को तर्क, तथ्य और प्रमाणों से आदर्शवादी तत्त्वदर्शन की प्रामाणिकता सिद्ध की जा सके।

2. प्रश्न: ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में किस विज्ञान की शोध का विभाग आरम्भ किया गया है?

उत्तर: यहाँ जड़ी-बूटी विज्ञान की शोध का एक विभाग आरम्भ किया गया है, जिसे आयुर्वेद का जीर्णोद्धार भी कहा जा सकता है।

3. प्रश्न: अब तक अध्यात्म के सिद्धांत किस आधार पर माने जाते थे?

उत्तर: अब तक अध्यात्म के सिद्धांत शास्त्र के उल्लेख और आप्त वचनों (महापुरुषों के कथन) के आधार पर माने जाते थे।

4. प्रश्न: आज की पीढ़ी अध्यात्म को स्वीकार करने के लिए क्या अपेक्षा करती है?

उत्तर: आज की पीढ़ी बुद्धिवाद को प्रमुखता देने के कारण तर्क, तथ्य, प्रमाण और उदाहरण की अपेक्षा करती है।

5. प्रश्न: ब्रह्मवर्चस की प्रयोगशाला में मनुष्य की किस शक्ति को आँकने का विभाग जोड़ा गया है?

उत्तर: यहाँ मनुष्य की शारीरिक और मानसिक जीवनीशक्ति आँकने का विभाग जोड़ा गया है।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "अध्यात्म का विज्ञान के आधार पर प्रतिपादन" से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इससे लेखक का तात्पर्य है कि अध्यात्म की मान्यताओं (जैसे- प्रार्थना, यज्ञ, ध्यान का प्रभाव) को केवल आस्था का विषय न मानकर, उन्हें वैज्ञानिक प्रयोगों, तर्कों और प्रमाणों द्वारा सिद्ध करना। इसका उद्देश्य

आधुनिक बुद्धिवादी समाज के सामने अध्यात्म को एक प्रामाणिक और तर्कसंगत विषय के रूप में प्रस्तुत करना है।

2. प्रश्न: ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के कार्य नई पीढ़ी को कैसे प्रभावित कर सकते हैं?

उत्तर: ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के कार्य नई पीढ़ी को बहुत गहराई से प्रभावित कर सकते हैं। आज की पीढ़ी हर बात को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर कसती है। जब अध्यात्म के सिद्धांतों को वैज्ञानिक शोध और आधुनिक यंत्रों द्वारा प्रमाणित किया जाएगा, तो नई पीढ़ी का संदेह दूर होगा और वे आदर्शवादी जीवन-दर्शन को अधिक विश्वास के साथ अपना पाएंगे।

3. प्रश्न: जड़ी-बूटी विज्ञान की शोध को "आयुर्वेद का जीर्णोद्धार" क्यों कहा गया है?

उत्तर: इसे "आयुर्वेद का जीर्णोद्धार" इसलिए कहा गया है क्योंकि यह प्राचीन आयुर्वेदिक ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक शोध के साथ जोड़कर उसे पुनर्जीवित करने का प्रयास है। यह केवल पुरानी मान्यताओं को दोहराना नहीं, बल्कि उन्हें वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करके आज के समय के लिए और अधिक उपयोगी और विश्वसनीय बनाना है।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की आज के युग में क्या आवश्यकता है?

उत्तर: आज के युग में विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की अत्यधिक आवश्यकता है। विज्ञान ने हमें भौतिक सुविधाएँ दी हैं, लेकिन दिशाहीन होकर उसने प्रदूषण, हथियार और नैतिक पतन जैसी समस्याएँ भी पैदा की हैं। वहीं, अध्यात्म जीवन को नैतिकता, उद्देश्य और संतुलन प्रदान करता है। जब अध्यात्म विज्ञान को दिशा देगा और विज्ञान अध्यात्म को तर्क और प्रमाण का आधार प्रदान करेगा, तो एक ऐसे संतुलित समाज का निर्माण होगा जहाँ भौतिक प्रगति के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का भी विकास हो।

2. प्रश्न: क्या केवल तर्कों और प्रमाणों से आदर्शवादी जीवन-दर्शन को पूरी तरह सिद्ध किया जा सकता है?

इस पर अपने विचार स्रोतों के आधार पर व्यक्त करें।

उत्तर: स्रोतों के अनुसार, तर्कों और प्रमाणों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, विशेषकर नई पीढ़ी के लिए। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान इसी उद्देश्य से काम कर रहा है। हालाँकि, स्रोत यह भी संकेत देते हैं कि केवल तर्क पर्याप्त नहीं हैं। आदर्शवादी जीवन के लिए भाव संवेदना, श्रद्धा और एक प्रेरक व्यक्तित्व का होना भी आवश्यक है। मिशन के सूत्र संचालक का स्वयं का जीवन एक जीवंत उदाहरण है, जो लेखनी और वाणी से भी अधिक शक्तिशाली है। अतः, यह कहा जा सकता है कि तर्क और प्रमाण एक मजबूत आधार बनाते हैं, लेकिन आदर्शवाद को जीवन में उतारने के लिए प्रेरणा, आस्था और भावनात्मक जुड़ाव भी अनिवार्य हैं।

अध्याय 8: घर-घर अलख जगाने की प्रक्रिया दीप यज्ञों के माध्यम से

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: आजकल के सम्मेलन-समारोहों में लोगों को एकत्रित करने में क्या कठिनाई आती है?

उत्तर: आजकल सम्मेलन-समारोहों में जनता की अरुचि बढ़ जाने से बड़ी संख्या में लोगों को, विशेष रूप से श्रद्धावानों को, एकत्रित करना कठिन पड़ता है।

2. प्रश्न: पुरातन यज्ञ आयोजनों की कुछ कमियाँ क्या थीं?

उत्तर: पुरातन यज्ञों में बहुत पैसा और समय खर्च होता था, ढेरों खाद्य पदार्थ जलते थे और पुरोहितों पर निर्भरता होती थी, जिससे कई बार संगठन की जगह विघटन पैदा हो जाता था।

3. प्रश्न: "दीपयज्ञ" की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर: "दीपयज्ञ" एक सरल प्रक्रिया है जिसमें हर व्यक्ति अपनी थाली पर पाँच अगरबत्ती और एक दीपक लेकर आता है और सामूहिक गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ संगीत और प्रवचन के माध्यम से युग परिवर्तन का संदेश दिया जाता है।

4. प्रश्न: दीपयज्ञ के बाद क्या किया जाता है?

उत्तर: दीपयज्ञ के बाद उपस्थित प्रतिभावान लोगों का एक "प्रज्ञा मण्डल" बना दिया जाता है।

5. प्रश्न: दीपयज्ञ की प्रक्रिया को व्यापक बनाने की योजना क्यों है?

उत्तर: इसे व्यापक बनाने की योजना है ताकि हर गाँव-नगर में पहुँचकर हर व्यक्ति से संपर्क साधा जा सके और नए युग का संदेश पहुँचाया जा सके।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: दीपयज्ञ को "युग-धर्म के अनुरूप" क्यों कहा गया है?

उत्तर: दीपयज्ञ को "युग-धर्म के अनुरूप" इसलिए कहा गया है क्योंकि यह आज के समय की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुकूल है। यह कम खर्चीला, सरल, सर्व सुलभ है और इसमें जाति या वर्ग का कोई भेद नहीं होता। यह प्राचीन यज्ञों के मूल उद्देश्य (लोगों को जोड़ना और प्रेरित करना) को आधुनिक और व्यावहारिक रूप में पूरा करता है।

2. प्रश्न: दीपयज्ञ केवल एक कर्मकांड न होकर जन-जागृति का माध्यम कैसे बनता है?

उत्तर: दीपयज्ञ केवल एक कर्मकांड नहीं है क्योंकि इसका मुख्य जोर विधि-विधान पर नहीं, बल्कि संगीत और प्रवचन के माध्यम से दिए जाने वाले संदेश पर होता है। इसमें लोगों को प्रगतिशीलता के पथ पर चलने, समाज सुधार करने और सामूहिक संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। "प्रज्ञा मण्डल" का गठन इसे एक सतत आंदोलन का रूप देता है।

3. प्रश्न: परंपरागत यज्ञों से दीपयज्ञ किस प्रकार अधिक समावेशी और प्रभावी है?

उत्तर: परंपरागत यज्ञों की तुलना में दीपयज्ञ अधिक समावेशी है क्योंकि इसमें कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ग का हो, आसानी से भाग ले सकता है। यह अधिक प्रभावी इसलिए है क्योंकि यह खर्चीला और जटिल न होने के कारण आसानी से कहीं भी आयोजित किया जा सकता है, जिससे इसकी पहुँच बहुत व्यापक हो जाती है और यह विघटन के बजाय संगठन को बढ़ावा देता है।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "श्रद्धावानों को एकत्रित करने की कठिनाई" आज के समाज की किस समस्या की ओर संकेत करती है? दीपयज्ञ इस समस्या का समाधान कैसे करता है?

उत्तर: यह कठिनाई आज के समाज में धर्म और आध्यात्मिकता के प्रति बढ़ती अरुचि और संदेह की समस्या की ओर संकेत करती है। लोग पारंपरिक कर्मकांडों को आडंबरपूर्ण और अव्यावहारिक मानने लगे हैं। दीपयज्ञ इस समस्या का समाधान एक सरल, तर्कसंगत और प्रेरणादायक प्रारूप प्रस्तुत करके करता है। इसमें आडंबर की जगह भावनाओं और विचारों को महत्व दिया जाता है, जिससे यह आधुनिक मानसिकता के लोगों, विशेषकर श्रद्धावानों को, आकर्षित करने में सफल होता है।

2. प्रश्न: दीपयज्ञ, विचारगोष्ठी और सभा-सम्मेलन की त्रिस्तरीय विधा जन-जागरण के लिए एक पूर्ण रणनीति कैसे बनाती है?

उत्तर: यह त्रिस्तरीय विधा एक पूर्ण रणनीति बनाती है क्योंकि यह मनुष्य के व्यक्तित्व के तीनों स्तरों पर काम करती है। प्रातःकाल यज्ञ (दीपयज्ञ) लोगों के हृदय में श्रद्धा और भावना को जगाता है। दोपहर में विचारगोष्ठी बुद्धि और तर्क को संतुष्ट करती है, जहाँ समस्याओं पर गहन चिंतन होता है। सायं सभा-सम्मेलन सामूहिक संकल्प और सामाजिक क्रियान्वयन के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार, यह रणनीति भावना, विचार और कर्म, तीनों को एक साथ साधती है, जिससे जन-जागरण का कार्य सर्वांगीण और स्थायी बनता है।

अध्याय 9: सन्धि बेला एवं इक्कीसवीं सदी का अवतरण

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, युगसन्धि की अवधि कब से कब तक मानी गई है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सन् १९८९ से सन् २००० तक की बारह वर्ष की अवधि को युगसन्धि माना गया है।

2. प्रश्न: युगसन्धि काल की तुलना किससे की गई है?

उत्तर: इसकी तुलना संध्याकाल (रात्रि के अंत और दिन के उदय के बीच का समय) से की गई है।

3. प्रश्न: प्रकृति का कौन-सा नियम अतिवाद को सहन नहीं करता?

उत्तर: प्रकृति का नियंत्रण और संतुलन का नियम किसी भी प्रकार के अतिवाद को सहन नहीं करता।

4. प्रश्न: युगसन्धि के दौरान कौन-सी दोहरी प्रक्रिया चलने की बात कही गई है?

उत्तर: इस दौरान अवांछनीयताओं का समापन (विनाश) और सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन (सृजन) की दोहरी प्रक्रिया चलने की बात कही गई है।

5. प्रश्न: दिव्यदर्शी इक्कीसवीं सदी के बारे में क्या अनुभव करते रहे हैं?

उत्तर: दिव्यदर्शी यह अनुभव करते रहे हैं कि इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य को अपने आँचल में लपेटकर स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरेगी।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युगसन्धि काल को उपासना के लिए उपयुक्त समय क्यों माना गया है?

उत्तर: युगसन्धि काल को उपासना के लिए उपयुक्त माना गया है क्योंकि यह परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। जैसे प्रभात के समय प्रकृति में नई चेतना का संचार होता है, वैसे ही युग परिवर्तन के इस काल में किए गए सकारात्मक प्रयास (उपासना) भविष्य के निर्माण के लिए बीज का काम करते हैं और उनका प्रभाव बहुत गहरा और स्थायी होता है।

2. प्रश्न: "घड़ी का पेण्डुलम एक सीमा तक ही आगे बढ़ता है, फिर उसे वापस लौटना पड़ता है।" इस उदाहरण से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस उदाहरण से लेखक यह समझाना चाहते हैं कि प्रकृति में संतुलन का एक शाश्वत नियम है। पिछले ३०० वर्षों में मनुष्य ने भौतिकवाद और स्वार्थपरता की जो अति कर दी है, वह अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी है। अब प्रकृति के नियम के अनुसार, इस पेण्डुलम को वापस संतुलन और आध्यात्मिकता की ओर लौटना ही होगा।

3. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि नियन्ता न तो पृथ्वी का सर्वनाश सहेगा और न ही मनुष्य को नर-पिशाच बनने देगा?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि सृष्टि का एक स्रष्टा (नियन्ता) है जिसने मनुष्य को अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में गरिमा प्रदान की है। यदि मनुष्य अपनी उद्वेगता से सृष्टि का विनाश करने लगे या अपनी गरिमा खोकर पशु जैसा आचरण करे, तो यह स्रष्टा के उद्देश्य को कलंकित करेगा। इसलिए, स्रष्टा की व्यवस्था स्वयं इस अनर्थ को रोकेगी और संतुलन स्थापित करेगी।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युगसन्धि में "अवांछनीयताओं का प्रायश्चित" और "सुखद सम्भावनाओं का बीजारोपण" साथ-साथ कैसे संभव है?

उत्तर: यह दोनों प्रक्रियाएँ एक साथ वैसे ही संभव हैं जैसे एक किसान खेत तैयार करते समय खरपतवार को उखाड़ता (विनाश/प्रायश्चित) है और साथ ही नए बीज बोता (सृजन/बीजारोपण) है। युगसन्धि काल एक ऐसा ही समय है जहाँ प्रकृति और दैवी चेतना पुरानी गलतियों और नकारात्मक प्रवृत्तियों (अवांछनीयता) को तूफानी अंधड़ की तरह साफ करेगी ताकि नई सकारात्मक ऊर्जा, नए विचार और सत्प्रवृत्तियों (सुखद सम्भावनाएँ) के अंकुरण के लिए स्वच्छ भूमि तैयार हो सके। विनाश और सृजन यहाँ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

2. प्रश्न: क्या बीसवीं सदी का अंत केवल विनाशकारी घटनाओं से भरा होगा या इसमें सृजन की प्रक्रिया भी शामिल होगी? स्रोतों के आधार पर विश्लेषण करें।

उत्तर: स्रोतों के अनुसार, बीसवीं सदी का अंत केवल विनाशकारी नहीं होगा। इसमें "अवांछनीयताओं का समापन" और "सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन" की दोहरी प्रक्रिया एक साथ चलेगी। जहाँ एक ओर पिछली गलतियों का परिणाम (प्रायश्चित) प्राकृतिक संतुलन के रूप में सामने आएगा, वहीं दूसरी ओर इसी समय में इक्कीसवीं सदी की सुखद संभावनाओं का "बीजारोपण" भी होगा। यह विनाश सृजन के लिए स्थान बनाने हेतु होगा, न कि पूर्ण सर्वनाश के लिए। तूफानी अंधड़ का उद्देश्य कूड़े-कचरे को हटाकर सुंदरता को स्थापित करना है।

अध्याय 10: भावी सम्भावनाएँ—भविष्य कथन

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: नेस्ट्राडामस ने सन् २००० के बाद आने वाले समय को क्या नाम दिया है?

उत्तर: नेस्ट्राडामस ने इस समय को 'एज ऑफ ट्रुथ' (सत्य का युग) के नाम से वर्णित किया है।

2. प्रश्न: विभिन्न भविष्यवक्ताओं के अनुसार, नव सृजन में किस देश की प्रमुख भूमिका होगी?

उत्तर: विभिन्न भविष्यवक्ताओं जैसे नेस्ट्राडामस, प्रोफेसर हरार, जीन डिक्सन और स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, नव सृजन में भारत की प्रमुख भूमिका होगी।

3. प्रश्न: महर्षि अरविन्द के अनुसार सन् २००० से पूर्व क्या घटित होगा?

उत्तर: उनके अनुसार, सन् २००० से पूर्व आत्मबल सम्पन्न प्रतिभाओं में उत्कृष्ट (सुपर) चेतना का अवतरण होगा, जो लोगों के विचारों में भारी परिवर्तन लाएगी।

4. प्रश्न: चर्चिल ने निराशा के समय में कौन-सा नारा दिया था?

उत्तर: उन्होंने 'वी' फॉर विक्ट्री (विजय हमारी निश्चित है) का नारा दिया था।

5. प्रश्न: "टाइम" पत्रिका ने भारत के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर: "टाइम" पत्रिका ने लिखा है कि "एक नया नेतृत्व भारत के रूप में उभर रहा है" और भारत अपनी आध्यात्मिक विरासत तथा प्रतिभाओं के आधार पर विश्व का नेतृत्व करेगा।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने विभिन्न भविष्यवाणियों का उल्लेख क्यों किया है? इसका मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर: लेखक ने इन भविष्यवाणियों का उल्लेख लोगों के मन में वर्तमान समस्याओं को लेकर फैली निराशा और आशंका को दूर करने के लिए किया है। इसका मुख्य उद्देश्य एक सकारात्मक और आशावादी वातावरण बनाना है, ताकि लोग टूटे हुए मनोबल के साथ बैठने के बजाय सृजनात्मक कार्यों के लिए जुट पड़ें और उज्ज्वल भविष्य में विश्वास पैदा कर सकें।

2. प्रश्न: चर्चिल के नारे 'वी' फॉर विक्ट्री का उदाहरण आज के संदर्भ में कैसे प्रासंगिक है?

उत्तर: यह उदाहरण आज के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक है। जैसे युद्ध के समय चर्चिल के नारे ने निराश अंग्रेजों में उत्साह भर दिया था, वैसे ही आज जब दुनिया समस्याओं से घिरी है और लोग भविष्य को लेकर आशंकित हैं, तब "इक्कीसवीं सदी—उज्ज्वल भविष्य" का उद्घोष एक नए उत्साह का संचार कर सकता है। यह लोगों को नकारात्मकता से निकालकर सृजन के लिए प्रेरित करने की एक मनोवैज्ञानिक रणनीति है।

3. प्रश्न: क्या भारत का विश्व नेतृत्व केवल आध्यात्मिक होगा या इसमें अन्य पहलू भी शामिल होंगे? भविष्यवाणियों के आधार पर बताएँ।

उत्तर: भविष्यवाणियों के अनुसार, भारत का नेतृत्व केवल आध्यात्मिक नहीं होगा। "टाइम" पत्रिका के अनुसार, भारत अपनी "आध्यात्मिक विरासत, युवाशक्ति, बुद्धिजीवियों और प्रतिभावानों की प्रचुर संख्या" के आधार पर नेतृत्व करेगा। यह दर्शाता है कि यह नेतृत्व आध्यात्मिकता के साथ-साथ ज्ञान, प्रतिभा और युवा ऊर्जा का एक मिला-जुला रूप होगा, जो विश्व की सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम होगा।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "मनोबल टूटने का दुष्परिणाम सर्वविदित है।" इस कथन का विश्लेषण करें और बताएँ कि उज्ज्वल भविष्य का उद्घोष इस दुष्परिणाम को कैसे रोक सकता है?

उत्तर: "मनोबल टूटने" का अर्थ है आशा और आत्मविश्वास खो देना। जब किसी व्यक्ति या समाज का मनोबल टूट जाता है, तो वह प्रयास करना छोड़ देता है और समस्याओं के सामने आत्मसमर्पण कर देता है, जिससे स्थिति और भी बिगड़ जाती है। "इक्कीसवीं सदी—उज्ज्वल भविष्य" का उद्घोष एक शक्तिशाली मनोवैज्ञानिक उपकरण के रूप में काम करता है। यह लोगों के मन में एक सकारात्मक लक्ष्य और आशा की किरण जगाता है। जब लोगों को विश्वास होता है कि अंततः विजय अच्छाई की ही होगी, तो वे वर्तमान कठिनाइयों से लड़ने के

लिए एकजुट हो जाते हैं, जैसा कि चर्चिल के नारे के प्रभाव से हुआ था। यह उद्धोष निराशा को आशा में बदलकर लोगों को निष्क्रियता से सक्रियता की ओर ले जाता है।

2. प्रश्न: विभिन्न संस्कृतियों और देशों के भविष्यवक्ताओं द्वारा भारत की केंद्रीय भूमिका पर जोर देना किस गहरे सत्य की ओर इशारा करता है?

उत्तर: विभिन्न संस्कृतियों (फ्रांसीसी नेस्ट्राडामस, अमेरिकी जीन डिक्सन, आदि) के भविष्यवक्ताओं द्वारा भारत की भूमिका पर एकमत होना इस गहरे सत्य की ओर इशारा करता है कि विश्व की वर्तमान समस्याओं का समाधान केवल भौतिक या तकनीकी प्रगति से नहीं हो सकता। समाधान के लिए एक गहरे आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसकी विरासत भारत के पास है। यह संकेत करता है कि भविष्य में विश्व का नेतृत्व सैन्य या आर्थिक शक्ति से नहीं, बल्कि विचार, चेतना और मानवीय मूल्यों की शक्ति से होगा, और भारत इस वैचारिक क्रांति का केंद्र बनेगा।

अध्याय 11: 21 वीं सदी की आध्यात्मिक गंगोत्री

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने इक्कीसवीं सदी की तुलना किससे की है?

उत्तर: लेखक ने इक्कीसवीं सदी को दूसरे "गंगावतरण" से तुलनीय बताया है।

2. प्रश्न: युगसन्धि महापुरश्चरण कितने वर्षों तक चलेगा?

उत्तर: युगसन्धि महापुरश्चरण बारह वर्षों तक चलेगा।

3. प्रश्न: जो लोग व्यस्त या असमर्थ हैं, उनके लिए कौन-सी प्रतीक साधना बताई गई है?

उत्तर: उनके लिए पाँच मिनट की मानसिक ध्यान धारणा की प्रतीक साधना बताई गई है, जिसमें वे ध्यान में ही हरिद्वार, गंगा और शान्तिकुञ्ज की यात्रा करते हैं।

4. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी के गंगावतरण का उद्गम स्थल किसे माना जा सकता है?

उत्तर: इस गंगावतरण का उद्गम स्थल शान्तिकुञ्ज को माना जा सकता है, जैसे गंगा का उद्गम गंगोत्री है।

5. प्रश्न: युगसन्धि महापुरश्चरण की पूर्णाहुति कब और कितने साधकों के साथ होने की आशा है?

उत्तर: इसकी पूर्णाहुति इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में सन् २००१ में होगी और इसमें एक करोड़ साधकों के भाग लेने की आशा की गई है।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने शान्तिकुञ्ज को ही युग अवतरण का केंद्र क्यों माना है?

उत्तर: लेखक ने इसके कई कारण बताए हैं: यह गंगा की गोद में, हिमालय की छाया में, और सप्त ऋषियों की

तपस्थली पर स्थित है। इसे दिव्य साधनाओं और यज्ञों से पवित्र और सशक्त बनाया गया है। इन्हीं कारणों से दैवी चेतना ने इस आश्रम को युग अवतरण का भागीरथी प्रयत्न करने का कार्यभार सौंपा है।

2. प्रश्न: प्राचीन वानप्रस्थ परम्परा और आज के समय में लोकसेवियों की आवश्यकता में क्या समानता है?

उत्तर: दोनों में समानता यह है कि जैसे प्राचीनकाल में वानप्रस्थी लोग समाज कल्याण के लिए समर्पित होते थे, जिससे समाज में उत्कृष्टता बनी रहती थी, उसी प्रकार आज भी नव सृजन के लिए ऐसे ही समर्पित लोकसेवियों की आवश्यकता है जो जन कल्याण के लिए अपनी महत्वाकांक्षाएँ जगा सकें।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, अकेला भगीरथ जब गंगा ला सकता है तो आज नव सृजन कैसे संभव है?

उत्तर: लेखक का तर्क है कि जब एक व्यक्ति (भगीरथ) इतना बड़ा काम कर सकता है, तो आज जब समय की माँग है और दैवी प्रवाह का सहयोग भी मिल रहा है, तो अनेकों अद्भुत प्रतिभाओं का कौशल मिलकर नव सृजन के लिए युगशिल्पी क्यों नहीं बना सकता? यह पूरी तरह संभव है।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "एक करोड़ साधकों द्वारा व्रतशील पूर्णाहुति" का क्या प्रतीकात्मक और वास्तविक महत्त्व है?

उत्तर: इसका प्रतीकात्मक महत्त्व यह है कि यह सामूहिक संकल्प और एकता की शक्ति का प्रतीक है। इसका वास्तविक महत्त्व यह है कि जब बड़ी संख्या में लोग एक ही लक्ष्य के लिए एकनिष्ठ होकर एकत्रित होते हैं, तो एक प्रचंड आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न होती है। लेखक को आशा है कि यह शक्ति अगले सौ वर्षों तक युग परिवर्तन की प्रक्रिया को सार्थक बनाएगी और इसमें भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को नवनिर्माण के लिए विशिष्ट दायित्व सौंपे जाएँगे।

2. प्रश्न: मानसिक ध्यान-साधना कैसे एक व्यापक महापुरश्चरण में भागीदारी सुनिश्चित कर सकती है?

इसके पीछे का मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक सिद्धांत क्या हो सकता है?

उत्तर: यह साधना इस सिद्धांत पर आधारित है कि मानसिक और भावनात्मक जुड़ाव भौतिक उपस्थिति जितना ही शक्तिशाली हो सकता है। मनोवैज्ञानिक रूप से, यह व्यक्ति को हर दिन लक्ष्य के साथ जोड़ता है, जिससे उसकी प्रतिबद्धता बनी रहती है। आध्यात्मिक रूप से, यह माना जाता है कि चेतना स्थान और समय की सीमाओं से परे है। जब कोई व्यक्ति पूरी श्रद्धा से मानसिक रूप से किसी पवित्र स्थान और अनुष्ठान से जुड़ता है, तो उसकी चेतना उस सामूहिक ऊर्जा का हिस्सा बन जाती है। इस प्रकार, व्यस्ततम व्यक्ति भी केवल पाँच मिनट में इस महान अनुष्ठान का अंग बनकर अपना योगदान दे सकता है।

अध्याय 12: इस पूर्णाहुति के सत्परिणाम

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: सन् १९५८ में सहस्र कुण्डीय गायत्री महायज्ञ कहाँ सम्पन्न हुआ था?

उत्तर: यह यज्ञ गायत्री तपोभूमि मथुरा के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ था।

2. प्रश्न: १९५८ के यज्ञ में कितने साधक आए थे और कितने शाखा-संगठन बनाए गए थे?

उत्तर: इसमें चार लाख साधक आए थे और लगभग छह हजार शाखा-संगठन बनाए गए थे।

3. प्रश्न: विगत तीस वर्षों के महत्त्वपूर्ण नवसृजन कार्यों को किसका परिणाम बताया गया है?

उत्तर: इन्हें सन् १९५८ के सहस्र कुण्डीय महायज्ञ का ही सत्परिणाम बताया गया है।

4. प्रश्न: लेखक ने हजारी किसान का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: लेखक ने यह बताने के लिए उदाहरण दिया है कि यदि व्यक्ति में सच्ची लगन हो, तो वह अकेले भी बड़े काम कर सकता है, जैसे हजारी किसान ने एक हजार आम के बाग लगवा दिए।

5. प्रश्न: उदारचेता व्यक्ति अपनी तृष्णा पूरी करने वालों से किस प्रकार भिन्न हैं?

उत्तर: संकीर्ण स्वार्थी लोग केवल अपनी तृष्णा पूरी करने में लगे रहते हैं, जबकि उदारचेता व्यक्ति अपने समय, श्रम और मनोयोग को बचाकर महत्त्वपूर्ण जनकल्याण के कार्य करते हैं और अपना इतिहास अमर बना देते हैं।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: सन् २००१ की पूर्णाहुति का प्रभाव १९५८ के यज्ञ से कहीं अधिक व्यापक क्यों माना गया है?

उत्तर: इसका प्रभाव इसलिए अधिक व्यापक माना गया है क्योंकि इसमें साधकों की संख्या (चार लाख के मुकाबले एक करोड़) बहुत अधिक है और इसका लक्ष्य भी बड़ा है—विश्वव्यापी युग परिवर्तन। लेखक का मानना है कि इस सामूहिक संकल्प का धक्का पूरे सौ वर्षों तक अपनी शक्ति का परिचय देगा।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, सफलता के लिए योग्यता या सुविधा से अधिक महत्त्वपूर्ण क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सफलता के लिए योग्यता या सुविधा से अधिक महत्त्वपूर्ण "लगन" है। यदि किसी कार्य के लिए सच्ची लगन हो, तो व्यक्ति असंभव लगने वाले कार्यों को भी पूरा कर सकता है, जैसे फरहाद ने पहाड़ काटकर नहर बना दी थी।

3. प्रश्न: "एक को देखकर दूसरा व्यक्ति बुरी ही नहीं, अच्छी परम्पराएँ भी अपना सकता है।" इस कथन से लेखक एक लाख लोकसेवी तैयार करने की योजना को कैसे संभव बताते हैं?

उत्तर: लेखक का मानना है कि यदि लोकसेवा का एक तूफानी आंदोलन और प्रचलन शुरू किया जाए, तो लोग एक-दूसरे से प्रेरणा लेकर इस अच्छी परम्परा को अपनाएंगे। जैसे बुरी आदतें फैलती हैं, वैसे ही एक

सकारात्मक माहौल बनाकर अच्छी आदतों और समर्पण के भाव को भी व्यापक रूप से फैलाया जा सकता है, जिससे एक लाख लोकसेवी तैयार करना संभव हो जाएगा।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: १९५८ का यज्ञ और २००१ की प्रस्तावित पूर्णाहुति, युग निर्माण मिशन की रणनीति में मील के पत्थर कैसे हैं?

उत्तर: ये दोनों आयोजन मिशन की रणनीति में मील के पत्थर हैं। १९५८ का यज्ञ एक आधारशिला थी, जिसने संगठन का ढाँचा (६००० शाखाएँ) तैयार किया और अगले ३० वर्षों के कार्यों की ऊर्जा प्रदान की। २००१ की पूर्णाहुति उस ढाँचे पर एक भव्य निर्माण की योजना है। यह केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक नए युग की शुरुआत का शंखनाद है, जिसका उद्देश्य अगले १०० वर्षों के लिए युग परिवर्तन की दिशा और ऊर्जा सुनिश्चित करना है। यह एक छोटी शुरुआत से एक विश्वव्यापी आंदोलन तक की यात्रा के दो महत्वपूर्ण पड़ाव हैं।

2. प्रश्न: "संकीर्ण स्वार्थपरता की जंजीरों में जकड़े हुए लोगों" और "उदारचेता" व्यक्तियों के बीच का अंतर आज के समाज की सबसे बड़ी चुनौती और समाधान कैसे है?

उत्तर: यह अंतर आज के समाज की सबसे बड़ी चुनौती है क्योंकि अधिकांश लोग संकीर्ण स्वार्थ में जकड़े हैं, जिससे शोषण, असंतोष और सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है। यही लोग प्रगति के साधनों का दुरुपयोग करते हैं। दूसरी ओर, इसका समाधान "उदारचेता" व्यक्तियों में छिपा है। जब लोग स्वार्थ से ऊपर उठकर जनकल्याण के लिए अपना समय और श्रम लगाते हैं, तो वे न केवल समाज का भला करते हैं, बल्कि अमर इतिहास भी रचते हैं। लेखक का विश्वास है कि इक्कीसवीं सदी से पहले ऐसा वातावरण बना लिया जाएगा जहाँ लोग स्वार्थ की जंजीरें तोड़कर उदारता को अपनाएँगे, और यही युग परिवर्तन का आधार बनेगा।

अध्याय 13: शिक्षण सत्र व्यवस्था

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में शिक्षण सत्रों का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर: इनका मुख्य उद्देश्य युग शिल्पियों का उत्पादन और अभिवर्धन (विकास) करना है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में कितने-कितने दिनों के शिक्षण सत्र रखे गए हैं?

उत्तर: विशेष योग्यता के लिए एक महीने के और व्यस्त लोगों के लिए नौ-नौ दिन के शिक्षण सत्र रखे गए हैं।

3. प्रश्न: एक महीने में नौ दिन वाले सत्र कब-कब सम्पन्न होते हैं?

उत्तर: ये हर महीने की १ से ९, ११ से १९ और २१ से २९ तारीख तक सम्पन्न होते हैं।

4. प्रश्न: सत्रों में सम्मिलित होने के लिए क्या प्रक्रिया है?

उत्तर: इच्छुक व्यक्ति को अपना पूरा परिचय भेजकर इच्छित सत्र में सम्मिलित होने की स्वीकृति प्राप्त करनी होती है।

5. प्रश्न: महिलाओं के लिए सत्रों में शामिल होने के लिए क्या विशेष नियम है?

उत्तर: उन सुयोग्य महिलाओं को ही सम्मिलित होने की सुविधा है, जिनकी गोद में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चे नहीं हैं।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: थोड़े-थोड़े समय के प्रशिक्षण सत्र रखने के पीछे क्या कारण है?

उत्तर: इसके पीछे कारण यह है कि कम समय और कम साधनों में अधिक से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया जा सके। यह एक व्यावहारिक तरीका है जिससे व्यस्त लोग भी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं और आंदोलन का विस्तार तेजी से हो सकता है।

2. प्रश्न: छोटे बच्चों वाली माताओं पर सत्र में शामिल होने का प्रतिबन्ध क्यों लगाया गया है?

उत्तर: यह प्रतिबन्ध इसलिए है क्योंकि बहुत छोटे बच्चे शिक्षण व्यवस्था में गड़बड़ी पैदा करते हैं। इससे न केवल उनकी माताओं का ध्यान बँटता है, बल्कि दूसरे शिक्षार्थियों की एकाग्रता भी भंग होती है। इसका उद्देश्य प्रशिक्षण की गुणवत्ता बनाए रखना है।

3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की शिक्षण व्यवस्था को "प्रतिभा परिष्कार और नवसृजन का राजमार्ग" क्यों कहा गया है?

उत्तर: इसे "राजमार्ग" इसलिए कहा गया है क्योंकि यह एक सुव्यवस्थित और प्रभावी रास्ता प्रदान करता है जिससे व्यक्ति अपनी प्रतिभा को निखार सकता है (प्रतिभा परिष्कार) और फिर उस निखरी हुई प्रतिभा का उपयोग नए युग के निर्माण (नवसृजन) में कर सकता है। यह व्यक्ति को एक उद्देश्यपूर्ण दिशा देता है।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज के शिक्षण सत्र केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित न होकर "युग शिल्पियों का उत्पादन" कैसे करते हैं?

उत्तर: ये सत्र केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं देते, बल्कि व्यक्तित्व को निखारने, प्रतिभा को परिष्कृत करने और प्रेरणा का प्रवाह भरने पर जोर देते हैं। "युग शिल्पी" का अर्थ है वह व्यक्ति जो नए युग का निर्माण करने में सक्षम हो। ये सत्र साधनात्मक तपश्चर्या और व्यावहारिक प्रशिक्षण का समन्वय करके व्यक्ति को ज्ञान, प्रेरणा और संकल्प से भर देते हैं, जिससे वे केवल शिक्षार्थी न रहकर समाज को बदलने वाले "शिल्पी" बन जाते हैं।

2. प्रश्न: इन सत्रों में "अनुशासन प्रिय" होने की शर्त क्यों रखी गई होगी? यह नवसृजन के लक्ष्य से कैसे जुड़ता है?

उत्तर: "अनुशासन प्रिय" होने की शर्त इसलिए रखी गई है क्योंकि कोई भी बड़ा और सामूहिक लक्ष्य बिना अनुशासन के प्राप्त नहीं किया जा सकता। नवसृजन एक विशाल और व्यवस्थित कार्य है जिसके लिए व्यक्तिगत और सामूहिक अनुशासन अनिवार्य है। जो व्यक्ति स्वयं अनुशासित नहीं होगा, वह समाज में सुधार या सृजन का कार्य प्रभावी ढंग से नहीं कर सकता। अनुशासन ही व्यक्ति को एक बड़े लक्ष्य के प्रति निरंतर और समर्पित रूप से कार्य करने की क्षमता देता है।

अध्याय 14: अपने समय का महान आन्दोलन—नारी जागरण

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग सन्धि के वर्षों में कौन-सा बड़ा आन्दोलन उभरने की बात कही गई है?

उत्तर: महिला जागरण का बड़ा आन्दोलन उभरने की बात कही गई है।

2. प्रश्न: न्यायशीलता सनातन काल से किस तथ्य का प्रतिपादन करती रही है?

उत्तर: न्यायशीलता यह प्रतिपादन करती रही है कि 'नर और नारी एक समान' हैं।

3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज ने महिला जागरण के लिए प्रथम कार्यक्रम क्या हाथ में लिया है?

उत्तर: प्रथम कार्यक्रम के रूप में २४ हजार महिला दीपयज्ञ सम्पन्न करने का लक्ष्य लिया गया है, ताकि देश की अधिकांश महिलाओं को एकत्रित और संगठित किया जा सके।

4. प्रश्न: महिला आन्दोलन अगले दिनों कौन-से दो प्रमुख कार्य हाथ में लेगा?

उत्तर: यह शिक्षा और स्वावलम्बन को प्रोत्साहन तथा धूम-धाम वाली खर्चीली शादियों में असहयोग, ये दो कार्य हाथ में लेगा।

5. प्रश्न: पाकिस्तान की किस महिला ने प्रधानमंत्री बनकर एक नई परम्परा को जन्म दिया था?

उत्तर: पाकिस्तान की बेनजीर भुट्टो ने प्रधानमंत्री बनकर एक नई परम्परा को जन्म दिया था।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, पुरुष ने नारी का शोषण क्यों किया, जबकि समानता का विचार हमेशा से मौजूद रहा है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, पुरुष ने अपनी "बलिष्ठता के अहंकार" के कारण नारी को पालतू पशु जैसी मान्यता दी और उसका शोषण किया, भले ही समानता का विचार हमेशा से मौजूद रहा हो।

2. प्रश्न: इस बार का नारी जागरण पिछले सुधारों से अनोखा और भिन्न कैसे होगा?

उत्तर: यह इस बार अनोखा होगा क्योंकि यह केवल छिटपुट प्रयास नहीं है, बल्कि एक व्यापक परिवर्तन का माहौल बना रहा है। इसमें महिलाओं का आत्मविश्वास जागेगा, पुरुषों का रुख बाधा डालने का नहीं बल्कि सहयोग का होगा और शासकीय व्यवस्था में भी उन्हें प्रतिनिधित्व मिलेगा, जिससे यह समग्र परिवर्तन लाएगा।

3. प्रश्न: खर्चीली शादियों को नारी जागरण के आंदोलन से क्यों जोड़ा गया है?

उत्तर: खर्चीली शादियों को इसलिए जोड़ा गया है क्योंकि इसी प्रथा ने बेटी और बेटे के बीच भेद-भाव की मोटी दीवार खड़ी की है। इस कुप्रचलन को समाप्त करके ही लैंगिक समानता की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया जा सकता है और महिलाओं को बोझ समझने की मानसिकता को बदला जा सकता है।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: नारी जागरण आंदोलन में "पुरुषों का रुख बाधा पहुँचाने का नहीं, वरन् उदारतापूर्ण सहयोग देने का होगा"—यह परिवर्तन कैसे संभव होगा? इसके पीछे कौन-सी वैचारिक क्रांति काम कर रही है?

उत्तर: यह परिवर्तन इसलिए संभव होगा क्योंकि यह आंदोलन केवल महिलाओं का नहीं, बल्कि समग्र "विचार क्रांति" का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जनमानस का परिष्कार करना है। इसके पीछे यह वैचारिक क्रांति काम कर रही है कि समाज की प्रगति तब तक अधूरी है जब तक उसका आधा हिस्सा (नारी) पिछड़ा रहे। जब पुरुषों को यह समझाया जाएगा कि नारी की प्रगति वास्तव में पूरे समाज की प्रगति है और यह न्याय एवं समता के सिद्धांत पर आधारित है, तो उनका अहंकार टूटेगा और वे सहयोगी की भूमिका में आ जाएँगे। यह समग्र वैचारिक परिवर्तन का परिणाम होगा।

2. प्रश्न: २४ हजार महिला दीपयज्ञों की योजना केवल एक आयोजन न होकर एक सामाजिक आंदोलन की नींव कैसे है? इसके दूरगामी परिणाम क्या हो सकते हैं?

उत्तर: यह योजना एक सामाजिक आंदोलन की नींव है क्योंकि इसका उद्देश्य केवल भीड़ इकट्ठा करना नहीं है, बल्कि महिलाओं को एकत्रित और संगठित करना है। इन यज्ञों के माध्यम से महिला मण्डलों का संगठन किया जाएगा जो "एक से पाँच, पाँच से पच्चीस" के सिद्धांत पर हर क्षेत्र में फैलेंगे। इसके दूरगामी परिणाम होंगे: (१) महिलाओं में शिक्षा और स्वावलम्बन बढ़ेगा, (२) खर्चीली शादी जैसी कुरीतियाँ समाप्त होंगी, (३) समाज में लैंगिक समानता आएगी, और (४) महिलाएँ "देवी की भूमिका" में घर-घर अलख जगाकर भावी पीढ़ी का नेतृत्व करेंगी, जिससे एक सुसंस्कृत समाज का निर्माण होगा।

अध्याय 15: विचार क्रान्ति—जनमानस का परिष्कार

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने नवयुग के भव्य भवन के निर्माण की तुलना किन पौराणिक कार्यों से की है?

उत्तर: इसकी तुलना समुद्र सेतु बंधन, लंका दहन, संजीवनी बूटी वाला पर्वत उखाड़ना, गोवर्धन उठाना और अगस्त्य द्वारा समुद्र पीना जैसे कार्यों से की है।

2. प्रश्न: परशुराम ने उद्दण्डों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए क्या किया था?

उत्तर: परशुराम ने कुल्हाड़ा उठाया था और जिन्हें बदलना आवश्यक था, उनका सिर (चिन्तन) पूरी तरह फेर दिया था।

3. प्रश्न: आज संसार की अधिकांश आबादी किस संकट से ग्रसित है?

उत्तर: आज अधिकांश जन समुदाय विचार विकृति और आस्था संकट से ग्रसित है।

4. प्रश्न: ध्वंस और सृजन में से कौन-सा कार्य अधिक कठिन है?

उत्तर: ध्वंस सरल है और सृजन कठिन है।

5. प्रश्न: नवयुग में कौन-से गुण अवतरित होकर रहेंगे?

उत्तर: नवयुग में शालीनता, आत्मीयता, सद्भावना और सहकारिता का अवतरण होकर रहेगा।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: आज की विचार क्रान्ति परशुराम के कार्य से अधिक कठिन क्यों है?

उत्तर: यह इसलिए अधिक कठिन है क्योंकि परशुराम के समय आबादी बहुत कम (तीस करोड़) थी और उद्दण्डों की संख्या भी छोटी थी। आज आबादी ६०० करोड़ है और अधिकांश लोग विचार विकृति से ग्रसित हैं। इसलिए, यह कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा और व्यापक है, जिसके लिए हजारों परशुराम भी कम पड़ेंगे।

2. प्रश्न: "जनमानस का परिष्कार" से लेखक का क्या अभिप्राय है?

उत्तर: इससे लेखक का अभिप्राय है लोगों के मन में गहराई से बैठे हुए गलत दृष्टिकोणों (विचार विकृति) और मान्यताओं (आस्था संकट) को जड़ से बदलना। यह केवल बाहरी व्यवहार में परिवर्तन नहीं, बल्कि चिन्तन और मनःक्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन करना है, जिसमें अवांछनीयताओं का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन शामिल है।

3. प्रश्न: लेखक ध्वंस को सरल और सृजन को कठिन क्यों कहते हैं?

उत्तर: लेखक उदाहरण देते हुए कहते हैं कि माचिस की एक तीली पूरे गाँव को जला सकती है (ध्वंस), लेकिन एक राज्य बसाने (सृजन) के लिए अनेक समर्थ लोगों के कौशल की आवश्यकता होती है। ध्वंस के लिए बहुत कम प्रयास चाहिए, जबकि सृजन के लिए योजना, कौशल, धैर्य और निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: क्या आज के युग में "परशुराम का कुल्हाड़ा" प्रासंगिक है? यदि हाँ, तो इसका आधुनिक स्वरूप क्या होगा?

उत्तर: स्रोतों के अनुसार, आज के युग में परशुराम का भौतिक "कुल्हाड़ा" प्रासंगिक नहीं है, लेकिन उसका प्रतीकात्मक अर्थ (चिन्तन को पूरी तरह फेर देना) बहुत प्रासंगिक है। इसका आधुनिक स्वरूप "विचार क्रान्ति" है। यह कुल्हाड़ा भौतिक नहीं, बल्कि "सद्विचारों" का है, जो कुविचारों को काटता है। यह एक बौद्धिक और वैचारिक शस्त्र है जिसका उपयोग विश्वव्यापी स्तर पर लोगों के मन में व्याप्त अवांछनीयताओं को खत्म करने और मानवीय गरिमा के अनुरूप विवेकशीलता स्थापित करने के लिए किया जाना है।

2. प्रश्न: यदि विचार क्रान्ति इतनी कठिन है, तो लेखक को यह विश्वास क्यों है कि "यह भवितव्यता सम्पन्न होकर रहेगी"?

उत्तर: लेखक को यह विश्वास इसलिए है क्योंकि वे मानते हैं कि यह कार्य केवल मनुष्यों का नहीं, बल्कि महाकाल (दैवी सत्ता) के तत्त्वावधान में उसकी योजना के अनुसार हो रहा है। उनका मानना है कि जब अधर्म बढ़ता है, तो दैवी सत्ता स्वयं संतुलन स्थापित करती है। भले ही यह कार्य हजारों परशुरामों से भी कठिन लगे, लेकिन इसे पूरा करने के लिए असंख्य भगीरथों (प्रेरित व्यक्तियों) का उदय होगा और दैवी प्रेरणा से यह असंभव कार्य भी संभव हो जाएगा।

अध्याय 16: सृजन प्रयोजनों के निमित्त समयदान

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग सन्धि के वर्षों में कितने नए लोकसेवी बनाने का लक्ष्य है?

उत्तर: इस अवधि में एक लाख नए नर-नारी लोकसेवी स्तर के बनाने का लक्ष्य है।

2. प्रश्न: शिक्षा के विस्तार के लिए हर शिक्षित व्यक्ति को क्या संकल्प लेने के लिए कहा गया है?

उत्तर: हर शिक्षित व्यक्ति को औसतन दस अशिक्षितों को शिक्षित बनाने का संकल्प लेने के लिए कहा गया है।

3. प्रश्न: विवाह विकृति को दूर करने के लिए किस प्रचलन को सामान्य प्रथा बनाना है?

उत्तर: बिना धूम-धाम और बिना दहेज-जेवर की शादियों के प्रचलन को सामान्य प्रथा बनाना है।

4. प्रश्न: यदि शिक्षित हुए लोगों को उपयुक्त साहित्य न मिला तो क्या परिणाम होगा?

उत्तर: यदि उन्हें उपयुक्त साहित्य न मिला तो वे विकृत साहित्य को अपनाकर पहले से भी अधिक घाटा उठाएँगे।

5. प्रश्न: बुद्ध और गाँधी के आंदोलनों से क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर: इनसे प्रेरणा मिलती है कि समय की माँग पर लाखों लोग अनायास ही बड़े उद्देश्यों के लिए जुड़ जाते हैं।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "विद्या प्राप्ति के ऋण से उच्छृण होना" का क्या अर्थ है? यह शिक्षा आन्दोलन को कैसे सफल बना सकता है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि जो ज्ञान हमने समाज से प्राप्त किया है, उसे दूसरों तक पहुँचाकर हम उस ऋण को चुका सकते हैं। यह एक नैतिक दायित्व है। यह शिक्षा आन्दोलन को इसलिए सफल बना सकता है क्योंकि यह सरकारी स्कूलों और धन पर निर्भरता को खत्म कर देता है और इसे एक जन-आंदोलन बना देता है, जहाँ हर शिक्षित व्यक्ति एक शिक्षक बन जाता है।

2. प्रश्न: "समयदान और अंशदान" का छोटा सहयोग भी बड़े सृजनात्मक कार्य कैसे कर सकता है?

उत्तर: जब हर व्यक्ति नवसृजन के लिए थोड़ा समय और थोड़ा अंशदान देने के लिए सहमत हो जाए, तो यह छोटा सहयोग मिलकर एक विशाल शक्ति बन जाता है। बूंद-बूंद से सागर भरने की तरह, करोड़ों लोगों का छोटा-सा योगदान भी हर क्षेत्र में अनेक सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों को फलने-फूलने का अवसर दे सकता है।

3. प्रश्न: लेखक क्यों मानते हैं कि भविष्य में मनीषा के धनी और प्रतिभाशाली लोग भी इस आंदोलन से जुड़ेंगे?

उत्तर: लेखक मानते हैं कि समय की माँग उन्हें प्रेरित और बाधित करेगी। सामान्य समय में लोग स्वार्थ में लगे रह सकते हैं, लेकिन आड़े समय में मनुष्य की अंतःचेतना जागती है और वे बड़े उद्देश्यों के लिए त्याग करने को तैयार हो जाते हैं, जैसा कि बुद्ध और गाँधी के समय हुआ था।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: नव साक्षरों के लिए "अभिनव साहित्य" की आवश्यकता पर इतना बल क्यों दिया गया है? यह विचार क्रान्ति की सफलता के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: इस पर इतना बल इसलिए दिया गया है क्योंकि शिक्षा एक दोधारी तलवार है। यदि नव-शिक्षित व्यक्ति की बौद्धिक क्षुधा को सही, प्रगतिशील और चरित्र-निर्माण करने वाले साहित्य से शांत नहीं किया गया, तो वह विकृत और नकारात्मक साहित्य का शिकार हो जाएगा। यह विचार क्रान्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि गलत साहित्य उसके मन में फिर से वही "विचार विकृति" पैदा कर देगा जिसे खत्म करने का प्रयास किया जा रहा है। सही साहित्य ही नवयुग के मनुष्य की चेतना का निर्माण कर सकता है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की तुलना "जेनरेटर" से क्यों की गई है? यह "उच्चस्तरीय प्रतिभाओं" के दिशा परिवर्तन में क्या भूमिका निभाएगा?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज की तुलना "जेनरेटर" से इसलिए की गई है क्योंकि जैसे जेनरेटर बिजली पैदा करके उपकरणों को गतिशील करता है, वैसे ही शान्तिकुञ्ज दिशा-प्रेरणा के स्रोत उत्पन्न करेगा जो लोगों को ऊर्जा

और मार्गदर्शन देगा। यह "उच्चस्तरीय प्रतिभाओं" के दिशा परिवर्तन में एक उत्प्रेरक (catalyst) की भूमिका निभाएगा। यह उन प्राणवानों को झकझोरेगा और उन्हें उनकी सामाजिक जिम्मेदारी का अहसास कराएगा, जिससे वे संकीर्ण स्वार्थ छोड़कर युग-धर्म के पालन के लिए प्रेरित होंगे।

अध्याय 17: दैवी सत्ता का सूत्र संचालन

• सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, बड़े-बड़े काम किसके तत्वावधान में सम्पन्न होते हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, ऐसे बड़े काम महाकाल (दैवी सत्ता) के तत्वावधान में, उसी की योजना के अनुसार सम्पन्न होते हैं।

2. प्रश्न: दैवी सत्ता की सहायता से किन लोगों ने श्रेय प्राप्त किया था?

उत्तर: सुदामा, नरसी मेहता, विभीषण, सुग्रीव, शबरी और गिलहरी जैसे लोगों ने दैवी सत्ता की सहायता से श्रेय प्राप्त किया था।

3. प्रश्न: मिशन के संस्थापक अपने जीवन के क्रिया-कलापों के पीछे प्रधान कारण किसे मानते हैं?

उत्तर: वे इसके पीछे प्रधान कारण दैवी शक्ति की अनुकूलता एवं अनुकम्पा को ही मानते हैं।

4. प्रश्न: गंगा को स्वर्ग से धरती पर लाने का निमित्त कौन बना?

उत्तर: गंगा को धरती पर लाने का निमित्त भगीरथ बने।

5. प्रश्न: युग देवता ने हर प्राणवान व्यक्ति को किस बात के लिए पुकारा है?

उत्तर: युग देवता ने हर प्राणवान को लिप्सा और कुत्साओं (बुरी इच्छाओं) के बन्धन ढीले करके नव सृजन के दैवी प्रयास में भागीदार बनने के लिए पुकारा है।

• कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "महान् कार्य महान् व्यक्तियों के द्वारा सम्पन्न होते रहे हैं।" इस कथन का क्या तात्पर्य है, जबकि लेखक कहते हैं कि कार्य भगवान् करते हैं?

उत्तर: इस कथन का तात्पर्य यह है कि निराकार स्रष्टा स्वयं सीधे काम नहीं करता, बल्कि वह माध्यम के रूप में महान व्यक्तियों को चुनता है। यह महानता उन व्यक्तियों की अपनी नहीं होती, बल्कि यह दैवी योजना का हिस्सा होती है। जैसे चेतना काम करती है और श्रेय शरीर को मिलता है, वैसे ही कार्य दैवी सत्ता करती है और श्रेय उसके द्वारा चुने गए माध्यम (महान व्यक्ति) को मिलता है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि इंजन के बिना रेल चलने की आशंका नहीं करनी चाहिए? यहाँ इंजन कौन है?

उत्तर: लेखक यह आश्वासन देने के लिए ऐसा कहते हैं कि मिशन के संस्थापक के न रहने पर भी कार्य नहीं रुकेगा। यहाँ "इंजन" सूत्र संचालक की अदृश्य सत्ता या महाकाल की सामर्थ्य है। उनका तर्क है कि जो दैवी शक्ति ८० वर्षों से हर कदम पर सफलता देती आई है, वह आगे भी सौंपी गई जिम्मेदारियों को स्वयं सँभाल लेगी।

3. प्रश्न: "नियन्ता की विधि-व्यवस्था के अनुशासन" से ज्ञान गंगा के अवतरण का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि उज्ज्वल भविष्य का आना निश्चित है, चाहे लोग स्वेच्छा से इसके लिए काम करें या न करें। यदि मनुष्य स्वेच्छा से नहीं बदलेगा, तो प्रकृति या दैवी व्यवस्था का अनुशासन (जैसे प्राकृतिक आपदाएँ या परिस्थितिजन्य दबाव) उसे बदलने के लिए बाध्य करेगा। परिवर्तन होकर रहेगा, माध्यम चाहे जो भी हो।

• कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: दैवी सत्ता के सहयोग और व्यक्तिगत पुरुषार्थ के बीच क्या संबंध है? अर्जुन और हनुमान के उदाहरण से इसे स्पष्ट करें।

उत्तर: दैवी सत्ता और व्यक्तिगत पुरुषार्थ में गहरा संबंध है; ये एक-दूसरे के पूरक हैं। दैवी सहयोग निष्क्रिय लोगों को नहीं मिलता। यह उन्हीं को मिलता है जो स्वयं पुरुषार्थ के लिए तत्पर होते हैं। अर्जुन एक महान योद्धा थे (पुरुषार्थ), लेकिन जब वे भ्रमित हुए तो कृष्ण (दैवी सत्ता) ने उन्हें मार्गदर्शन दिया। हनुमान में असीम बल और भक्ति थी (पुरुषार्थ), लेकिन समुद्र लांघने की अपनी शक्ति को वे भूले हुए थे, जिसे जामवंत ने याद दिलाया और दैवी कृपा ने उसे संभव बनाया। दिव्य सहयोग प्राप्त करने के लिए आत्मपरिष्कार (पात्रता) और लोकमंगल (उद्देश्य) की साधना द्वारा पुरुषार्थ करना आवश्यक है। दैवी शक्ति पुरुषार्थ को कई गुना बढ़ा देती है, लेकिन पुरुषार्थ की पहली शर्त को समाप्त नहीं करती।

2. प्रश्न: मिशन के संस्थापक द्वारा "स्थूल शरीर बदल लेने" और "सूक्ष्म शक्ति को आधार बनाने" का निर्णय युग परिवर्तन की प्रक्रिया के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: यह निर्णय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि युग परिवर्तन का कार्य इतना विशाल और विश्वव्यापी है कि उसे एक व्यक्ति के स्थूल शरीर की सीमाओं में रहकर पूरा नहीं किया जा सकता। स्थूल शरीर समय, स्थान और क्षमता में सीमित होता है। "सूक्ष्म शक्ति" बनकर वे इन सीमाओं से मुक्त हो जाएँगे। सूक्ष्म रूप में वे एक ही समय में लाखों लोगों को प्रेरणा दे सकते हैं, उनके विचारों को बदल सकते हैं और अदृश्य रूप से आंदोलन का संचालन कर सकते हैं। यह एक व्यक्ति की ऊर्जा को असीमित और सर्वव्यापी बनाने की एक आध्यात्मिक रणनीति है, ताकि विश्वव्यापी सृजन का महान कार्य बिना किसी बाधा के संपन्न हो सके।

प्रत्यक्षवादी तत्त्वदर्शन - यह एक ऐसी विचारधारा है जिसने आत्मा, परमात्मा, कर्मफल, नैतिकता, निष्ठा आदि मानवीय आदर्शों की गरिमा को एक कोने पर उठाकर रख दिया है। इसके अनुसार, तात्कालिक लाभ ही सब कुछ है, भले ही उसके लिए कितनी ही प्रवंचना और निष्ठुरता क्यों न अपनानी पड़े।

- **आज की प्रमुख समस्या** - विचार विकृति, आस्था संकट, भ्रान्तियों का घटाटोप और कुविचारों का साम्राज्य।
- **धर्म की धारणा और सत्य, प्रेम, न्याय की आराधना** - विचार क्रान्ति का व्यापक आयोजन करना, अवांछनीयता के विरुद्ध संघर्ष खड़ा करना और मानवीय गरिमा के अनुरूप मर्यादाओं का पालन और वर्जनाओं का अनुशासन अपनाने के लिए हर किसी को बाधित करना।
- **महाभारत (आज के संदर्भ में)** - विचार क्रान्ति का व्यापक आयोजन, अवांछनीयता के विरुद्ध संघर्ष, और मानवीय मर्यादाओं का पालन कराने का कार्य, जिसके लिए महाकाल ने प्रत्येक प्राणवान् को कटिबद्ध होने के लिए पुकारा है।
- **‘वी’ फॉर विकट्री (नारा)** - इंग्लैंड के प्रधानमंत्री चर्चिल द्वारा दिया गया एक नारा, जिसका उद्देश्य था कि इंग्लैंड अंततः विजयी होकर रहेगा और जीत निश्चित है। इस उद्धोष ने निराशा के बीच एक नया उत्साह भर दिया था।
- **युगसन्धि** - बीसवीं सदी का अन्त और इक्कीसवीं सदी के आरम्भ का मध्यवर्ती अन्तर, जिसे बारह वर्ष (सन् १९८९ से सन् २००० तक) का माना गया है। यह वह अवधि है जिसमें पिछली अवांछनीयताओं का प्रायश्चित्त होगा और सुखद सम्भावनाओं से भरी-पूरी इक्कीसवीं सदी का बीजारोपण होगा।
- **संध्याकाल** - रात्रि का अवसान और दिनमान का अरुणोदय जब मिलते हैं, तो उसे सन्धि या संध्याकाल कहा जाता है।
- **प्रज्ञापीठ** - संस्था द्वारा जगह-जगह बनाए गए छोटे-बड़े आश्रम, जो योजनाबद्ध रूप से कार्यकर्ताओं की गतिविधियों को उनके निकटवर्ती कार्यक्षेत्र में निरन्तर चलाने का केंद्र हैं।
- **आध्यात्मिक साम्यवाद (व्यावहारिक रूप में)** - शान्तिकुञ्ज में प्रचलित एक व्यवस्था जहाँ जाति और वंश के आधार पर कोई भेद नहीं है, नर और नारी एक समान हैं, और लोग मितव्ययिता भरा जीवन आत्मिक उल्लासपूर्वक जीते हैं।
- **ब्रह्मवर्चस आश्रम** - शान्तिकुञ्ज में विनिर्मित एक संस्थान जिसका उद्देश्य अध्यात्म का विज्ञान के आधार पर (तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरण के साथ) नए सिरे से प्रतिपादन करना है ताकि नई पीढ़ी की दृष्टि में आदर्शवादी तत्त्वदर्शन को प्रामाणिक सिद्ध किया जा सके।
- **दीपयज्ञ** - यज्ञ की एक ऐसी परम्परा जो व्यापक, विस्तृत, सुलभ और कम साधनों में संभव है। इसमें हर याजक अपनी थाली पर पाँच अगरबत्ती और एक दीपक लेकर आता है और सामूहिक गायत्री मन्त्रोच्चारण के

- साथ संगीत और प्रवचन के माध्यम से लोगों को प्रगतिशीलता के पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- **जनमानस का परिष्कार** - मन के क्षेत्र में व्याप्त अभ्यस्त दृष्टिकोणों का आमूलचूल परिवर्तन करना। इसे अवांछनीयताओं का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन भी कहा गया है।
 - **विश्व क्रान्ति** - महामनीषी हक्सले कामा के अनुसार, पिछली सभी क्रान्तियों से बढ़कर एकता और समता स्थापित करने वाली एक उभरती हुई क्रान्ति।
 - **इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण** - इक्कीसवीं सदी में ज्ञान गंगा का समस्त विश्व का सिंचन करने और समस्त मानव जाति का कल्याण करने के लिए उतरना। इसका उद्गम स्थल गंगोत्री की तरह शान्तिकुञ्ज को माना जा सकता है।